मेरी छोटी–सी है नाव .....

मेरी छोटी–सी है नाव, तोरे जादू भरे पाँव,
मोहे डर लागे राम, कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
ओ हो कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
वो तो पत्थर की बन गई नारी, यह लकड़ी की नाव हमारी।
म्हारो ओ ही रोजगार, मैं तो पालूँ परिवार, दूजा नहीं कारोबार
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
एक अरज मानो तो बिठाऊं, तोरे चरणों की धूल हटाऊं।
मेरी अरजी है मंजूर, तो मैं हाजिर हूं हजूर, सुनो–सुनोजी सरकार।
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
बड़े प्रेम से पाँव को धोऊं, जन्म–जन्म के पापों को धोऊँ।
वो तो हुआ मन प्रसन्न, कर राम के दर्शन, साथ सिया और लखन।
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
तुझे फूलों की भेंट चढ़ाऊं, मैं तो गीत खुशी के गाऊं,
आये सभी परिवार, मानो उनकी मनुहार, सुनो–सुनो जी सरकार।
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
लिया चरणामृत चरणों का, केवट सिया लखन अरू राम का,
बैठत नैया कर दो गंगा पार, दिया तीर पे उतार, तेरे ऊपर यही भार।
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
धीरे–धीरे से नाव चलाता, वो तो गीत खुशी के गाता,
कहता यूं ही मन में, सूरज डूबे क्षण में, नहीं जाये वन में, बैठे रहे सामने।
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
ले–लो ले–लो पहले उतराई, मेरे पल्ले कछु नहीं भाई,
करलो–करलो स्वीकार, तेरा बेड़ा होगा पार, तेरी होगी जय जयकार
कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।
जैसे तुम हो खैवय्या वैसे हम हैं, भाई–भाई से लेना शरम है,
हमने कर दी नदियां पार, तुम करना भवसागर पार, परमानन्द की
पुकार कैसे बिठाऊं तुझे नाव में।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान